भारत में शिक्षा के प्रशिक्षण के महत्व पर एक अध्ययन

[1]अमित कुमार श्रीवास्तव, [2]डॉ. सुमन शर्मा

[1]शोधार्थी, शिक्षा – विभाग, ओ.पी.जे.एस. विश्वविद्यालय, चुरु, राजस्थान, भारत
[2]शोध निर्देशक, शिक्षा – विभाग, ओ.पी.जे.एस. विश्वविद्यालय, चुरु, राजस्थान, भारत

Accepted: 08.11.2022 **Published**: 01.12.2022

मुख्य शब्दः व्यावसायिक, प्रशिक्षण और कार्यक्रम।

शोध आलेख सार

वर्तमान परिदृश्य में, 15–29 आयु वर्ग में हमारी जनशक्ति का केवल 2: ही औपचारिक रूप से कुशल है। हालांकि, आंकड़े बताते हैं कि 90: रोजगार के अवसरों के लिए व्यावसायिक कौशल की आवश्यकता होती है जो हमारे स्कूलों और कॉलेजों में प्रदान नहीं किए जा रहे हैं। ज्ञान आधारित अर्थ व्यवस्था में भारत के परिवर्तन के लिए बहु–कुशल युवाओं की एक नई पीढ़ी की आवश्यकता है। इसकी प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त इसके लोगों की ज्ञान को प्रभावी ढंग से बनाने, सांझा करने और उपयोग करने की क्षमता से निर्धारित होगी। एक ज्ञान अर्थव्यवस्था के लिए भारत को श्रमिकों– ज्ञान कार्यकर्ताओं और ज्ञान प्रौद्योगिकी विदों को विकसित करने की आवश्यकता होती है जो लचीले और विश्लेषणात्मक होते हैं और जो नवाचार और विकास के लिए प्रेरक शक्ति हो सकते हैं।

इसे प्राप्त करने के लिए, भारत को एक लचीली शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता है: सीखने की नींव प्रदान करने के लिए बुनियादी शिक्षा माध्यमिक और तृतीयक शिक्षा मुख्य क्षमताओं और मूल हाथों को विकसित करने के लिए– कौशल और आजीवन सीखने को प्राप्त करने के आगे के साधनों पर। रचनात्मकता को बढ़ावा देकर और सभी स्तरों पर शिक्षा और प्रशिक्षण की गुणवत्ता में सुधार करके शिक्षा प्रणाली को नए वैश्विक वातावरण से जोड़ा जाना चाहिए। हाल के वर्षों में हमारे देश में व्यावसायिक शिक्षा अत्यधिक महत्व प्राप्त कर रही है। शिक्षा प्रणाली के परिणाम के रूप में रोजगार की कमी ने कौशल आधारित शिक्षा की आवश्यकता को जन्म दिया है।

पहचान निशान

**Corresponding Author*

प्रस्तावना

विस्तार से यदि व्यवसायीकरण को देखें–समझें तो इसका अर्थ होता है– शिक्षा के साथ–साथ उन कोसों की भी व्यवस्था की जाए जो छात्रों को शिक्षा के साथ–साथ किसी व्यवसाय में भी कुशल

व्यक्ति बनाए। कोठारी कमीशन ने व्यवसायीकरण के व्यापक स्वरूप को लेकर जो विचारं प्रस्तुत किए हैं उनके अनुसार व्यवसायीकरण का अर्थ है , "हम यह देखते हैं कि भविष्य की विद्यालयी शिक्षा का स्थान साधारण शिक्षा व तकनीक शिक्षा के लाभप्रद संयोग में है, जिसमें पूर्व तकनीकी शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा के कुछ हिस्से शामिल हैं और परिणामस्वरूप सामान्य शिक्षा का तत्व आ जाता है। हम जिस प्रकार के समाज में रह रहे हैं उसमें इन दोनों प्रकार की शिक्षा को अलग–अलग करना अनुचित ही नहीं वरन् असम्भव होगा।" शिक्षा में व्यवसायीकरण का अर्थ उस शिक्षा से है जो विद्यार्थी को किसी वसाय में निपुण व समर्थ बनाती है। परन्तु माध्यमिक स्तर पर व्यवसायीकरण का अर्थ भिन्न–भिन्न लोगों ने भिन्न–भिन्न प्रकार से लिया है। कुछ लोग इसे किसी व्यवसाय विशेष में प्रशिक्षण देने से लेते हैं। इस दृष्टिकोण का उद्देश्य किसी विशेष पाठ्यक्रम के सुखान्त पर कोई काम शुरू करने के लिए किसी व्यापार कला, कौशल या किसी व्यवसाय आदि का सीखना है। परन्तु दूसरे समूह के लोग माध्यमिक शिक्षा में व्यवसायीकरण का अर्थ व्यवसायिक प्रशिक्षण से समझते हैं। परन्तु यह दृष्टिकोण अति संकीर्ण तथा संकुचित है। माध्यमिक शिक्षा आयोग ने ऐसा महसूस किया कि ऐसे विद्यालयों में शिक्षण कार्यक्रम एक निश्चित व्यवसायिक कार्यक्रम से जुड़े होंगे, क्योंकि ये विद्यालय मात्र व्यवसायिक विद्यालय मात्र नहीं है। भारतीय शिक्षा आयोग ने यह महसूस किया कि विद्यालय स्तर पर भविष्य में साधारण शिक्षा एवं व्यवसायिक शिक्षा में पूर्व व्यवसायिक तथा तकनीकी तत्व शामिल होंगे और व्यवसायिक शिक्षा साधारण शिक्षा का तत्व बनाए रखेगी। इन दोनों प्रकार की शिक्षाओं को पूर्ण रूप से अलग नहीं किया जा सकता है, क्योंकि पूर्ण अलगाव का सोचना भी अवांछनीय तथा असंभव है।

व्यावसायिक शिक्षा की बढ़ती आवश्यकताः

हमारे राष्ट्र के विकास के साथ, कुशल जनशक्ति की बढ़ती आवश्यकता है और व्यावसायिक शिक्षा छात्रों को नौकरी के लिए तैयार करती है। व्यवसाय और सरकारी क्षेत्रों दोनों में कुशल श्रम की माँग बढ़ी है। कुशल पेशेवरों की बढ़ती मांग के कारण व्यावसायिक शिक्षा में तेजी से वृद्धि हुई है। समय की अवधि में व्यावसायिक शिक्षा में अत्यधिक विविधता आई है। पर्यटन, सूचना प्रौद्योगिकी, बैंकिंग और वित्त, खुदरा प्रबंधन, बीपीओ, आतिथ्य और पारंपरिक शिल्प जैसे विभिन्न उद्योगों में कुशल पेशेवरों की मांग बढ़ी है। विभिन्न संस्थान हैं जो युवाओं को नौकरी के लिए तैयार करने के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करते हैं।

वर्तमान में शिक्षा रट्टा–लर्निंग पर अधिक जोर देती है न कि व्यावहारिक कार्य पर। प्रतिस्पर्धा बढ़ने के कारण छात्रों पर बहुत दबाव है। व्यावसायिक शिक्षा छात्रों को उनकी रुचि के कैरियर का चयन करने, व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करने और तैयार करने की अनुमति देती है।

भारत में शिक्षित युवाओं और विभिन्न क्षेत्रों में मांग के कौशल के बीच असमानता है। कुशल जनशक्ति की अधिक आवश्यकता है जो नौकरी की उम्मीदों को पूरा कर सके। व्यावसायिक शिक्षा छात्रों को नौकरी की उम्मीदों को पूरा करने के लिए प्रशिक्षित कर सकती है। नौकरी की मांग और अपेक्षाओं को

पूरा करने के लिए छात्रों को व्यावसायिक शिक्षा लेने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।

भारत में छात्रों को अच्छा स्कोर करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है और अच्छे कॉलेज में प्रवेश मिलता है चाहे वह व्यावसायिक प्रशिक्षण देता हो या नहीं। छात्रों को अपने हितों के अनुसार कैरियर को आगे बढ़ाने का अवसर मिलना चाहिए और साथ ही उन्हें आवश्यक मानसिकता होने पर भी उन्हें डॉक्टर और इंजीनियर बनने के लिए धकेलने के बजाय उनके कैलिबर के अनुसार करना चाहिए।

साहित्य की समीक्षा

(शिक्षा आयोग, 1952) ने ''भारत में माध्यमिक शिक्षा प्रणाली'' का अध्ययन में पाया कि माध्यमिक शिक्षा देश के शैक्षिक पैटर्न में एक बहुत ही रणनीतिक स्थिति रखती है। यह प्राथमिक शिक्षा और उच्च शिक्षा के बीच की कड़ी है। प्राथमिक शिक्षा का उद्देश्य जीवित रहने के लिए न्यूनतम आवश्यकताएं प्रदान करना है जहां माध्यमिक शिक्षा एक व्यक्ति को जटिल समाज का पूर्ण सदस्य बनने में सक्षम बनाती है। स्वतंत्रता के बाद हमारे देश ने माध्यमिक शिक्षा के क्षेत्र में एक महान उल्लेखनीय परिवर्तन प्राप्त किया। भारत सरकार ने स्वतंत्रता प्राप्ति के तुरंत बाद माध्यमिक शिक्षा प्रणाली की समीक्षा के लिए कई समितियों और आयोगों की नियुक्ति की।

(चौधरी, 2010) ने ''माध्यमिक शिक्षा और समस्याएं'' का अध्ययन में पाया कि शिक्षा कोई नवीन बात नहीं हैं संसार का कोई देश ऐसा नहीं है जहाँ पर ज्ञान के प्रेम की परम्परा भारत से अधिक प्राचीन वशक्तिशाली है।' शिक्षा प्राप्त करने का उद्देश्य केवल जीविकोपार्जन करना ही नही या वरन शिक्षा मोक्ष प्राप्ति का एक साधान माना गया था। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य को ज्ञान प्राप्त होतो है। ज्ञान से ही उसके मस्तिष्क का विकास होता है उसके व्यक्तित्व का विकास होता है उस आध्यातित्मक और पारलौकिक विषयों की अनुभूति होने लगती है तभी ज्ञान को तीसरा नेत्र कहा गया है।

(गुल्ड शोर, 2017) ने "माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों का कम्प्यूटर सहायक अनुदेशन और कम्प्यूटर शिक्षा व कम्प्यूटर शिक्षा का सतर पर अभिवृत्ति" का अध्ययन में पाया कि महिला व पुरूष शिक्षकों के कम्प्यूटर सहायक अनुदेशन के प्रति अभिवृत्ति में महत्वपूर्ण अन्तर नहीं पाया गया। जब कि दोनों समूह के शिक्षकों के कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में महत्वपूर्ण अन्तर पाया गया।

(भादरमनी, जी. (1991) ने "प्रशिक्षण संस्थानों में दण्ड व सहयोग के वातावरण का विद्यार्थियों की संस्थान के प्रति अभिवृत्ति पर प्रभाव" का अध्ययन कर पाया कि प्रशिक्षण संस्थानों में दमनात्मक वातावरण का विद्यार्थियों की अभिवृत्ति पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। एच.आर.डी. प्रतिमान का प्रभाव विद्यार्थियों की महाविद्यालयों के प्रति अभिवृत्ति को बदलने में सकारात्मक व प्रभावी भूमिका वाला रहा। दण्ड केस्तर तथा विद्यार्थियों की शिक्षकों के प्रति अभिवृत्ति, पाठयक्रम के प्रति अभिवृत्ति तथा संस्थान वातावरण के प्रति अभिवृत्ति में गहरा सम्बन्ध पाया गया।

(भरम्बे, एम. डी. (1991) – ने "प्रशिक्षण संस्थानों में विभिन्न पाठयक्रमों के प्रति विद्यार्थियों की बदलती हुई अभिवृत्तियों पर एक विविधता युक्त

विश्लेषणात्मक" अध्ययन विषय पर शोध कार्य किया। शोध कार्य के निष्कर्ष के रूप में पाया कि विद्यार्थियों की बदलती हुई अभिवृत्ति के पीछे कई कारण उत्तरदायी थे। लिंगभेद के आधार पर भी विद्यार्थियों की अभिवृत्ति में अन्तर पाया गया। विद्यार्थियों की मनोवैज्ञानिक व आर्थिक स्थिति का भी प्रभाव उनकी अभिवृत्तियों को बदलने में सहायक पाया गया।

(कौर, पी. (1992)– ने "विभिन्न स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिवृत्ति व व्यावसायिक उपलब्धि में सहसम्बन्ध विषय" पर शोध कार्य किया तथा निष्कर्ष रूप में बताया कि विज्ञान वर्ग व कला वर्ग के विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिवृत्ति व व्यावसायिक उपलब्धि में सार्थक सहसम्बन्ध पाया जाता है।

(मोहन, स्वदेष व गुप्ता, निर्मला (1992) ने "विभिन्न व्यावसायिक पाठयक्रमों में विद्यार्थियों के व्यावसायिक भविष्य की सुरक्षा के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति" का अध्ययन विषय पर शोध कार्य सम्पन्न कर निष्कर्ष रूप में बताया कि विभिन्न व्यावसायिक प्रशिक्षणों में अध्ययनरत लड़कियों व लड़कों में भविष्य के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर पाया जाता है।

शिक्षा के व्यवसायीकरण की आवश्यकता एवं महत्व

प्रत्येक राष्ट्र का यही प्रयास होता है कि उसके राष्ट्र की शिक्षा का ढाँचा उन्नत तथा सक्षम हो ताकि यह सभी व्यक्तियों की आवश्यकताओं तथा माँगों को पूरा कर सके। इसलिए देश में एक विशेष प्रकार की शिक्षा की व्यवस्था की जानी चाहिए, क्योंकि यह विशेष शिक्षा अर्थात् व्यवसायीकरण शिक्षा कई प्रकार से देश की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकती है। जिन क्षेत्रों में व्यवसायीकरण की आवश्यकता है वे निम्नलिखित है–

(1) **आर्थिक विकास के लिए–** भारत एकमात्र ऐसा देश है जिसे प्रकृति ने खुले दिल से अपने तीनों गुणों शक्ति, सुन्दरता तथा ताकत को भरपूर मात्रा में दिया है। परन्तु इतने अच्छे तथा सशक्त प्राकृतिक साधनों के बावजूद भी हमारे देश की आर्थिक व्यवस्था उतनी सुदृढ़ नहीं है, जितना इसे होना चाहिए था। इस अवनति का एक मुख्य कारण प्रशिक्षित मानवीय शक्ति का होना है।

(2) **बेरोजगारी की समस्या को हल करने के लिए–** भारत में बेरोजगारी की समस्या दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। ऐसे में व्यावसायिक शिक्षा बेरोजगारी की समस्या को दूर करने में सक्षम है। अतः शिक्षा में व्यवसायीकरण से शिक्षित लोगों में बेरोजगारी की समस्या को दूर किया जा सकता है। निःसन्देह व्यवसायीकरण विद्यार्थियों को किसी एक व्यवसाय में निपुण बनाती है। महात्मा गाँधी के अनुसार, "शिक्षा बेरोजगारी के विरुद्ध एक प्रकार का बीमा होना चाहिए।'

(3) **विद्यार्थियों की योग्यताओं, रुचियों तथा गुणों को प्रशस्त करने के लिए–**आयोग के अनुसार माध्यमिक शिक्षा का व्यवसायीकरण करने से विद्यार्थी अपनी–अपनी विशेष पसन्द तथा रुचियों के अनुरूप प्रशिक्षण ले सकते हैं। यह उनके लिए रोजगार के अवसर मुहैया कराने के साथ उन छुपी हुई क्षमताओं को भी विकसित करेगा।

रोजगार के विशेष क्षेत्र के लिए तैयार करने में व्यावसायिक शिक्षा की भूमिका

शिक्षा प्राप्त करना हर बच्चे का अधिकार है इससे हम सभी सहमत हैं। शैक्षिक प्रक्रिया ऐसी होनी चाहिए जो विद्यार्थियों में बुनियादी क्षमताओं और कौशलों का विकास कर सके ताकि वह एक संतुलित जीवन जीने के लिए तैयार हो सकें और राष्ट्र के विकास की प्रक्रिया में भागीदार बन सकें। ऐसा तभी सम्भव है जब विद्यार्थी सीखे गये सैद्धांतिक ज्ञान का व्यवहारिक प्रयोग भी कर सकें। इसलिए शिक्षा को मजबूत व्यावसायिक आधार प्रदान करने की जरूरत है। व्यावसायिक शिक्षा की व्यवस्था न केवल अलग संस्थाओं में की जानी चाहिए बल्कि स्कूली शिक्षा के हर स्तर की पाठय चर्चा से इसे अंतरंग रूप से जोड़ा जाना चाहिए। कुछ ऐसी ही संसस्तुतियाँ राष्ट्रीय पाठयचर्या की रूप रेखा–2005 में की गयी है। शिक्षा प्रक्रिया ऐसी होनी चाहिए जिससे छात्रों में आधारभूत क्षमता, योग्यता और कौशलों का विकास किया जा सके। जिस ज्ञान को शिक्षार्थी सीख और समझ रहा है, उसका प्रयोग भी होना चाहिए। यदि सीखे गये ज्ञान का जीवन में उपयोग नहीं होता है तो वह शिक्षा अपूर्ण और अधूरी ही मानी जाएगी, सीखा गया ज्ञान अनुपयोगी और बेकार हो जाएगा। इसलिए कहा जाता है कि शिक्षा की सार्थकता तभी है, जब छात्र सीखे गये सैद्धांतिक ज्ञान का व्यवहारिक प्रयोग कर सकें। रोजगार के संकुचित होते अवसर, न्यूनतम जीवन स्तर, प्रति व्यक्ति संसाधनों की कमी, कुशल मानव पुंजी की अनुपलब्धता, भूमि उत्पादकता में वृद्धि की माँग, स्वच्छ जल एवं ऊर्जा की पर्याप्त आपूर्ति, यातायात एवं संचार साधनों को सुगम बनाने की जरूरत, सिंचाई साधनों का पूरा विकास स्वास्थ्य संबंधी जरूरतें एवं सेवाएँ, तेजी से विकसित होता व्यापार एवं व्यवसाय आदि ऐसे कारक हैं भारत में बेरोजगारी एवं निर्धनता दयनीय एवं चिंताजनक स्थिति में है। दूसरी तरफ तेजी से बढ़ रही उत्पादकता की स्थिति में ही रोजगार की गुणवत्ता में सुधार प्राप्त किया जा सकता है।

भारत सरकार द्वारा प्रस्तावित योजनाएँ:

भारत सरकार वंचितों या आर्थिक रूप से पिछड़े वर्गों को व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए कई योजनाएँ प्रदान करती है। ऐसी योजनाओं में से कुछ सबसे महत्वपूर्ण नीचे दिए गए हैं।

1) उदान

यह कार्यक्रम विशेष रूप से जम्मू और कश्मीर राज्य के लिए बनाया गया है। कार्यक्रम की पांच साल की अवधि है और सूचना प्रौद्योगिकी, बीपीओ और खुदरा क्षेत्र में व्यावसायिक प्रशिक्षण और रोजगार प्रदान करता है।

2) पॉलिटेक्निक

पॉलिटेक्निक भारत के लगभग सभी राज्यों में मौजूद एक प्रकार का औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान है। यह इंजीनियरिंग और कंप्यूटर विज्ञान के विभिन्न विषयों में तीन वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम प्रदान करता है।

3) औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान

औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान विभिन्न इंजीनियरिंग और गैर इंजीनियरिंग विषयों में व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करते हैं। आई टी आई का प्रबंधन भारत सरकार के प्रशिक्षण और रोजगार महानिदेशालय द्वारा किया जाता है।

4) राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन

जून 2011 में लॉन्च किया गया, एन आर एल एम को विशेष रूप से बी पी ल (गरीबी रेखा से नीचे) समूह में लक्षित किया गया है। इसका उद्देश्य विभिन्न ट्रेडों में गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले लोगों के लिए अलग–अलग सक्षम और महिलाओं को व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करना है, ताकि वे स्वयं को रोजगारपरक बना सकें।

उपसंहार

राष्ट्रीय ज्ञान आयोग व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण को राष्ट्र में शिक्षा के विचार का एक महत्वपूर्ण घटक मानता है। व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण के लिए गतिशील राष्ट्रीय संदर्भ में अपने हिस्से को कुशलता पूर्वक निष्पादित करने के लिए और भारत के लिए रचनात्मक जनसांख्यिकी लाभांश के परिणामों का आनंद लेने के लिए, उन्हें चलायमान, समकालीन, प्रासंगिक, समावेशी और व्यावसायिक बनाने के लिए शिक्षा प्रदान करने के लिए महत्वपूर्ण तत्वों को फिर से परिभाषित करने की तत्काल आवश्यकता है। व्यावसायिक शिक्षाको प्रासंगिक और रचनात्मक बनाने के मार्ग में कई मजबूत मुद्दे और चुनौतियाँ हैं। योग्य शिक्षकों की कमी, बुनियादी सुविधाओं की अनुपस्थिति, नियमों और प्रमाणन में अंतर, अपर्याप्त संपर्क, रोजगार बाजार की असंतुलित माँग, आपूर्ति, असहायधारण और सार्वजनिक मानसिकता, सरकारी संस्थाओं तथा विनियमित तंत्र के मध्य समंजन का अभाव, अप्रचलित पाठ्यक्रम स्वायत्तता का अभाव, आदि।

सरकार, पर्यवेक्षकों की एक टीम स्थापित कर सकती हे जो व्यावसायिक और तकनीकी शिक्षा के मामलों की निगरानी, नियंत्रण और कार्यान्वयन के बेहतर तरीकों पर सरकार को सलाह देगी। आपको अवश्य ही स्वीकार करना चाहिए कि आपका ज्ञान देश के आर्थिक उत्थान और सामाजिक विकास का जनक है। वे देश जिन्होंने अपने ज्ञान और कौशल के स्तर में सुधार किया है वे ही वैश्विक दुनिया की चुनौतियों और अवसरों को स्वीकार करने में अधिक सफल और प्रोत्साहक हुए हैं। हमारा देश ज्ञान–आधारित अर्थव्यवस्था और उसके भविष्य में परिवर्तित हो रहा है। आपकी क्षमताओं से निर्धारित किया जाएगा, आप लोग जो ज्ञान को अधिक प्रभावी ढंग से उत्पन्न, बाँटना तथा उपयोग कर सकेंगे। इस संक्रमण के लिए सभी रचनाकारों को ज्ञान रचनाकारों को विकसित करने की आवश्यक होगी।

संदर्भ

- वीमिन चे – चीनी व्यावसायिक और तकनीकी शिक्षा और प्रशिक्षण के लिए विकास और सुधार के रुझान। विद्वानों के आदान–प्रदान के लिए चीनी सेवा केंद्र, दिसंबर 2009, 10 दिसंबर 2010, 10:59 पूर्वाह्न।
- होउ हैरी – नेशनल–लुई यूनिवर्सिटी–ए यूएस कम्युनिटी कॉलेज और एक चीनी संस्थान में करियर और तकनीकी शिक्षा कार्यक्रमों की तुलना, जनवरी 2010, 10 दिसंबर 2011, 11:17 पूर्वाह्न।
- तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा में सर्वोत्तम अभ्यास'' – चीन, पीपुल्स डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कोरिया और मंगोलिया, यूनेस्को, बीजिंगय 13 दिसंबर 2010, 12:58 अपराह्न।

- डॉ आनंद वाईके – भारत के लिए टीवीईटी में राष्ट्रीय योग्यता ढांचा – ''टीवीईटी में गुणवत्ता आश्वासन के लिए योग्यता फ्रेमवर्क का दोहन'' 1–2 दिसंबर, 2009, मनीला, फिलीपींस पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत मुद्दे और चुनौतियां 28 दिसंबर 2010, 4:54 अपराह्न।
- असंगठित क्षेत्र में मानव संसाधन और कौशल आवश्यकताएँ – एनएसडीसी, भारत द्वारा एक रिपोर्ट 22 जनवरी 2011, 12:19 बजे।
- प्रत्यायन, मान्यता और ऋण हस्तांतरण प्रक्रिया, अंतर्राष्ट्रीय उद्यमी संघ, यूकेय 11 दिसंबर 2011, 10:13 पूर्वाह्न।
- भारत अनौपचारिक शिक्षा, सभी वैश्विक निगरानी रिपोर्ट के लिए शिक्षा के लिए देश प्रोफाइल तैयार, 2008 अमित मित्रा, यूनेस्को द्वारा 6 जनवरी 2011, 11:34 पूर्वाह्न।
- व्यावसायिक शिक्षा निदेशालय, सरकार महाराष्ट्र।